हातिम-अल-ताई
और
कुण्डलिनी शक्ति
के 7 चक्र

--- ध्यानाचार्य

ब्रह्मचारी प्रहलादानंद

“ऊर्जा आपके भीतर है,
आपको मेडिटेशन करके,
इस ऊर्जा को,
जाग्रत करना चाहिए”

--- ध्यानाचार्य
ब्रह्मचारी प्रहलादानंद

हातिम-अल-ताई और कुण्डलिनी शक्ति के 7 चक्र

--- ध्यानाचार्य ब्रह्मचारी प्रहलादानंद

हातिम-अल-ताई और कुण्डलिनी शक्ति के 7 चक्र

- ब्रह्मचारी प्रहलादानंद ध्यानाचार्य

प्रकाशक -
ब्रह्मचारी प्रहलादानंद
संन्यास आश्रम
संन्यास आश्रम रोड़, विलेपार्ले (पश्चिम),
मुंबई - 400056 भारत

प्रथम संस्करण - 10 जनवरी सन् 2021, रविवार

संपर्क -
namaskar.meditation@gmail.com

--- ध्यानाचार्य ब्रह्मचारी प्रहलादानंद

सादर समर्पित

श्री परम पूज्य गुरुदेव जी महाराज
परम पूज्य परमादरणीय श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ
सुरतगिरि बंगला हरिद्वार पीठाधीश्वर आचार्य महामण्डलेश्वर

श्री स्वामी विश्वेश्वरानंद गिरिजी महाराज

--- ध्यानाचार्य ब्रह्मचारी प्रहलादानंद

लेखक

श्री ब्रह्मचारी प्रहलादानंद
(ध्यानाचार्य)

हातिमताई एवं कुण्डलिनी शक्ति

हातिमताई के सात सवाल के रहस्य कुण्डलिनी शक्ति के सप्तचक्र को जागृत करने के उपाय एवं अनुभव हैं। जिस प्रकार बादशाह बरजत की हवस की वजह से गुलनार परी पत्थर की बन जाती है। फिर पत्थर की बनी हुई गुलनार परी को पुनः जड़ से चेतन करने की प्रक्रिया ही यह सात सवाल हैं। इसलिए पत्थर की मूर्ति की पूजा प्रारंभ हुई। यह मूर्ति पूजा जड़ से चेतन तक की सप्त चक्र भेदन की यात्रा है।

हातिमताई के सात सवाल का रहस्य कुण्डलिनी के सप्तचक्र से संबंध रखते हैं। हाथ + ईम = जिसके हाथ में ईमान है। इसलिए उसे हातिम कहते हैं। ईमान इसमें सबसे जरूरी है। ईमान यानि ब्रह्मचर्य का अडिग रहना। शरीर, मन और आत्मा से ईमान में रहना। शरीर तम प्रधान है। मन रज प्रधान है। आत्मा सत्त्व प्रधान है। परमात्मा ईमान का द्योतक है। परमात्मा ईमान के रूप से व्यक्ति के भीतर रहता है। यही ईमान ब्रह्म है। इसी ब्रह्म को चरकर साधक ब्रह्मचारी बनता है। ब्रह्म ही परमात्मा के रूप से सभी में निवास करता है। क्योंकि ब्रह्म ही शक्ति है।

जब कुण्डलिनी को जागृत करना है तो आँखे उल्लू की भाँति होनी चाहिए। यानि दिन में सोना और रात में जागना चाहिए। यानि जब आँखे बंद कर ध्यान में बैठो तब भीतर के अंधेरे में अपनी आँखे

खोल कर रखो। इसलिए उसका नाम नजरूल है।

मूलाधार चक्र का रहस्य

- पहला सवाल -

एक बार देखा है। दूसरी बार देखने की हवस है।

जब कुण्डलिनी की यात्रा प्रारंभ होती है। तब कामुकता से बचना होता है, क्योंकि कामुकता सजीव को भी पत्थर बना देती है। कुण्डलिनी के साधक को सबसे पहले कामुकता पर विजय प्राप्त करनी होगी। जैसे बादशाह बरज़त ने कामुकता से गुलनारपरी को स्पर्श किया और गुलनारपरी पत्थर की हो गई।

इसी पत्थर की होने को कहते हैं "जड़ता"। कामुकता व्यक्ति की ऊर्जा को शरीर से बाहर फेंक देती है और व्यक्ति पत्थर-सा हो जाता है। निर्जीव-सा हो जाता है, जैसे व्यक्ति में जान ही नहीं है। इस तरह जब व्यक्ति कामुकता पर विजय प्राप्त कर लेता है। तब यही ऊर्जा व्यक्ति की आगे की साधना में सहायता करती है। तथा साधक की सुरक्षा करती है। फिर इसी ऊर्जा पर बैठकर साधक आगे की साधना करता है। बस इस ऊर्जा को बचाकर रखना है।

मूल का मतलब जड़। यानि जहाँ व्यक्ति को अपनी जड़ को रखना है। क्योंकि मूल ही आधार है। जड़ ही विभिन्न स्थानों से पानी को खींच कर लाती है और साधक को साधना में शक्ति प्रदान करती है। साधक मूल की जड़-शक्ति के आधार पर ही आगे की साधना में

निरन्तरता बनाए रखता है। इसलिए अपनी जड़ों को कुण्ड में डाले रहना है। यह कुण्ड ऊर्जा का स्तोत्र है।

मूलाधार जब खुलता है तब व्यक्ति का दिमाग खुल जाता है। क्योंकि मूलाधार से ऊर्जा सीधी मष्तिष्क में जाती है और व्यक्ति के दिमाग को खोलती है। जो व्यक्ति मूलाधार पर ही पतित हो जाता है वह व्यक्ति दिमाग से जड़ता को उपलब्ध हो जाता है।

इस यात्रा में नजरूल को अपने साथ में लेना है। नजर + उल = उल्लू जैसी नजर रखनी है। यानि रात को जागना और दिन में सोना। यानि अंधेरे में भी देखने की क्षमता का होना। चौकन्ना रहना। क्योंकि कामुकता कहीं से भी प्रवेश करती है।

यात्रा कामवासना से प्रारंभ होती है। गुल = उछाल। नार = शक्ति। मनुष्य के भीतर की शक्ति जब उछाल मारती है तो सबसे पसले उसे बाहर निकलने का मार्ग मिलता है। यदि इस मार्ग से बाहर नहीं निकलती तो दूसरे पायदान स्वाधीष्ठान पर पहुँच जाती है। फिर कभी बाहर नहीं निकलती है। पृथ्वी तत्व मूलाधार चक्र में रहता है। यह कामवासना का पायदान है। इसमें कामुकता पर विजय पाना है। यहाँ पर पृथ्वी तत्त्व का परिवर्तन जल तत्त्व में हो जाता है। व्यक्ति तरलता को उपलब्ध होता है।

स्वाधिष्ठान चक्र का रहस्य

- दूसरा सवाल -

नेकी कर दरिया में डाल।

मूलाधार से उठी ऊर्जा जब बाहर नहीं निकल पाती है तो ऊर्जा और ऊपर की तरफ उठ जाती है। ऊपर उठकर ऊर्जा जिस स्थान पर पहुँचती है उसे "स्वाधिष्ठान चक्र" कहते हैं।

इससे व्यक्ति के फेफड़े कार्य करना प्रारंभ कर देते हैं। यहाँ पर साधक को संसार से वैराग्य हो जाता है। और व्यक्ति फिर परमात्मा की प्राप्ति की राह में लग जाता है और दयालु हो जाता है। व्यक्ति का हृदय परिवर्तन हो जाता है। जिससे व्यक्ति में दयालुता का प्रवेश होता है। और फिर साधक बिना किसी उद्देश्य के केवल परमात्मा को साधने में लग जाता है।

स्वाधिष्ठान चक्र में व्यक्ति द्विज हो जाता है। व्यक्ति का दूसरा जन्म हो जाता है। व्यक्ति संसार में अपनी ऊर्जा नहीं लगाता है। इसी ऊर्जा से परमात्मा को प्राप्त करता है, इसी ऊर्जा को तो कुण्डलिनी कहते हैं। क्योंकि यह ऊर्जा का कुण्ड होती है।

स्वाधीष्ठान चक्र में व्यक्ति की साधना को पंख लग जाते हैं। व्यक्ति आगे की साधना में आसानी से जाता है। इसमें व्यक्ति को स्वाद की अनुभूति होती है। क्योंकि इसमें पृथ्वी तत्त्व एवं जल तत्त्व का

मिश्रण होता है। जो व्यक्ति को स्वाद प्रदान करता है। व्यक्ति को भूख लगने लगती है। स्वाधीष्ठान चक्र जल तत्त्व का स्थान है। इसमें साधक को दूसरों की सहायता करना है और उस की गई सहायता को भूल जाना है। उस सहायता का बखान नहीं करना।

स्वाधीष्ठान चक्र में साधक जो भी खाता है। उस खाने से जो ऊर्जा प्राप्त होती है। उस ऊर्जा को कुण्ड में डाल देना है। जो ऊर्जा का कुण्ड साधक के शरीर के भीतर है। उसे ही दरिया कहा गया है।

यह क्रोध का दूसरा पायदान है। स्वाधीष्ठान चक्र में साधक को क्रोध पर विजय प्राप्त हो जाती है।

मणिपुर चक्र का रहस्य

- तीसरा सवाल -

जैसा करेगा वैसा भरेगा।

यह चक्र साधक के नाभि स्थान पर होता है। जिससे मणिपुर चक्र में अग्नि तत्व है। जिस प्रकार मणि अपनी अग्नि से अपने को प्रकाशित रखती है। उसी प्रकार साधक के भीतर अग्नि प्रज्वलित हो जाती है। और साधक की यह अग्नि परीक्षा होती है। साधक के शरीर में गर्मी आती है। शरीर गर्म होने लगता है। पशीने से शरीर भर जाता है। यह गर्मी और गर्मी का पशीना सहन कर लेने पर बहुत ठंडक और शांति अनुभव होती है।

साधक की गर्मी से शरीर की समस्त नाड़ियाँ शुद्ध हो जाती है। जिससे व्यक्ति का रक्त शुद्ध हो जाता है। रक्त की शुद्धता से व्यक्ति के शरीर में सौम्यता और रूप में और निखार आ जाता है। व्यक्ति के बदले सुंदर एवं मोहक रूप को देखकर कोई भी स्त्री आकर्षित हो जाती है। व्यक्ति को यहाँ पर लोभ से बचना चाहिए। और आगे की साधना जारी रखनी चाहिए।

इसमें साधक के हाथ में ताकत आ जाती है। यहाँ पर व्यक्ति को अपने कार्य पर विशेष ध्यान देना है। किसी का अहित नहीं करना है। नहीं तो साधक का भी अहित हो जाएगा।

--- ध्यानाचार्य ब्रह्मचारी प्रहलादानंद

अनाहत चक्र का रहस्य

- चौथा सवाल -

सच्चे को हमेशा राहत है।

अना और हत। किसी की अना यानि बद्दुआ साधक को हत यानि नुकसान न पहुँचाए। इस बात का ध्यान इस चक्र में रखना होता है, यानि किसी को हत नहीं करना है। जिससे वह व्यक्ति बद्दुआ दे। और उस बद्दुआ से साधक को नुकसान हो। क्योंकि बद्दुआ हृदय से निकलती है और हृदय पर चोट करती है।

इस चक्र में साधक का जब हृदय में प्रवेश होता है। जो साधक सच्चा होता है। उस साधक को किसी की अना से हत नहीं होता है यानि बद्दुआ नहीं लगती है। इसलिए सच हमेशा कहना चाहिए। सच्चाई से हृदय साफ-सुथरा रहता है। और इस सच्चाई से व्यक्ति को राहत मिलती है। इसलिए सच्चे को हमेशा राहत है।

इस चक्र में मोह उत्पन्न होता है और मोह अपनी ओर खींचता है। मोह व्यक्ति को अंधा कर देता है। इस मोह से बचने के लिए साधक के हृदय से परमात्मा के लिए प्रार्थना निकलती है। और साधक का मोह से भरा अंधापन समाप्त हो जाता है। साधक की विवेकरूपी आँखे खुल जाती हैं। जो शक्ति साधक की मोह में खो गई थी। वह पुनः साधक को प्राप्त हो जाती है।

अनाहत चक्र में अन की आहट होती है। यानि साधक जो भी खाता-पीता है। उसका रस हृदय में जाता है। जो व्यक्ति के अंदर भिन्न-भिन्न प्रकार की आहट पैदा करता है। जिससे साधक आहत हो जाता है। जिस कारण साधक की शक्ति जो उसके साथ है वह छोटी हो जाती है। साधक से अलग हो जाती है। साधक का हृदय खुल जाता है। साधक में प्रार्थना का जन्म होता है।

यह वायु तत्व का चक्र है। क्योंकि बद्दुआ वायु पर सवार होकर चलती है। और साधक के खुले मुँह से साधक के हृदय में प्रवेश कर जाती है। इसलिए साधक को खुले मुँह सोना नहीं चाहिए। इस चक्र के खुलने से साधक को अना एवं हत से राहत मिलती। यानि अगर साधक को किसी की बद्दुआ लगी है तो वह बद्दुआ उसे छोड़ देती है।

इस चक्र में साधक की घृणा फिर प्रेम में बदल जाती है। साधक के हृदय में प्रार्थना उपजती।

अनाहत चक्र मोह का चौथा पायदान है। इसमें साधक को मोह पर विजय प्राप्त होती है।

विशुद्ध चक्र का रहस्य

-पाँचवा सवाल -

कोह निदा की खबर।

कोह यानि खोह। खोह यानि गुफा। इसमें साधक का हृदय से ऊपर कंठ में प्रवेश होता है। जहाँ पर निंदा रूपी राक्षस रहता है। जो वाणी रूपी सरस्वती को खाता रहता है। यानि कंठ रूपी जो कोह (खोह) है उसमें निंदा रूपी जिन्न रहता है। निंदा रूपी जिन्न शराब पीकर ऊल-जुलूल कुछ भी बकता है। उस निंदा को काबू में करना ही विशुद्ध चक्र में होता है।

विशुद्ध चक्र में व्यक्ति रंगीन मिजज हो जाता है। माँस और शराब खाता-पीता है। नृत्य आदि कला का शौकीन हो जाता है। कंठ में रहनेवाले इस रंगीन मिजाज जिन्न को बहला-फुसलाकर काबू में किया जाता है। फिर यही कंठ का जिन्न आगे के चक्र तक ले जाता है। विष + उद्ध = विशुद्ध पहले जब किसी को विष देकर मारा जाता था तो उसकी आखिरी ईच्छा पूछी जाती थी। यह आखिरी ईच्छा फिर बाद में विष के कारण से इसको Wish कहने लगे और फिर ईच्छा की जगह Wish का प्रयोग होने लगा।

विष कंठ में जाता है। और कंठ से ही व्यक्ति अपनी आखिरी ईच्छा बताता है। इसलिए इसे विशुद्ध चक्र कहते हैं। विशुद्ध चक्र से

व्यक्ति अपनी ईच्छाओं को शुद्ध करता है। और व्यक्ति की वाणी पर व्यक्ति का नियंत्रण हो जाता है।

इसमें साधक आकाश तत्व में आ जाता है। विशुद्ध चक्र पर साधक अपने वचन को निभाता है। इसमें व्यक्ति को किसी से ईर्ष्या हो जाती है और वह ईर्ष्यावश दूसरे की निंदा करने लगता है। इसलिए दूसरे की निंदा करने से बचना चाहिए।

आज्ञा चक्र का रहस्य

- छठा सवाल -

मुरगाबी के अण्डे के बराबर का मोती।

यह माना जाता है कि यह चक्र आज्ञा देता है कि यह करो वह करो। यही इसका तिलिस्म है।

यह चक्र जब सक्रिय होता है। तब व्यक्ति को माथे के बीच में एक Film की भाँति सब कुछ दिखाई देने लगता है। साधक की देखने की क्षमता बढ़ जाती है। इसलिए इसे तृतीय नेत्र भी कहते हैं यानि Third Eye.

आज्ञा चक्र आकार होता तो तिल (Sesame) के जितना है। परन्तु यह मुरगाबी के अण्डे के जितना बराबर आभासित होता है।

जिस प्रकार से Sim से सबकुछ देख सकते हैं। यानि Sim से Internet में प्रवेश किया और Internet सबकुछ दिखा देता है। उसी प्रकार तृतीय नेत्र सब दिखा देता है।

इस आज्ञा चक्र के चक्र में बड़े-बड़े साधक फंस जाते हैं। यहीं इसी आज्ञा चक्र से वापिस मूलाधार चक्र में आ जाते हैं।

आज्ञा चक्र सबकुछ प्रदान करता है। इस आज्ञा चक्र को सिद्ध करनेवाला साधक अपने आपको परमात्मा से कम नहीं समझता है। और यही एक कालण आज्ञा चक्र से साधक के पतन का कारण बनता

है। क्योंकि आज्ञा चक्र पर बैठा साधक तिलस्म के तिलस्म में फंस जाता।

साधक भगवान को चुनौती देता है। अपने आपको भगवान कहता है।

आज्ञा चक्र में कुण्डलिनी शक्ति साधक की सहायता करने के लिए आ जाती है। साधक की उल्लू की नजर यहीं पर काम आती है। साधक का भीतर का जागरण कार्य करता है।

साधक को आज्ञा चक्र पर सबसे अधिक सावधान रहने की आवश्यकता है। क्योंकि आज्ञा चक्र पर राग-द्वेष में साधक फंस सकता है।

यहाँ पर साधक तांत्रिक प्रयोगों का सहारा लेकर अपने आसपास माया रूपी संसार का निर्माण कर लेता है। और फिर साधक तांत्रिक बनकर अपनी इसी माया की दुनिया में खो जाता है। साधक अपनी माया के अहंकार में उलझ जाता है। भोग-विलास सब यहीं इसी चक्र में पूरे करता है।क्योंकि तन्त्र में पंच मकार का सेवन किया जाता है। यही पंच मकार - मद्य, माँस, मत्स्य, मुद्रा, मैथुन साधक को आज्ञा चक्र से सीधे मूलाधार चक्र में गिरा देता है।

यहाँ पर साधक को याद रखना है कि साधक को तृतीय नेत्र से ऊपर उठना है। आज्ञा चक्र से ऊपर उठकर सहस्रार परमात्मा तक जाना है। यहाँ पर आज्ञा चक्र ही साधक को परमात्मा तक जाने की आज्ञा देता है।

तृतीय नेत्र एक प्रकार का Check Point है जहाँ पर साधक की योग्यता की जाँच की जाती है। और फिर उसे आगे की यात्रा के लिए Permission दी जाती है। इसलिए यहाँ पर साधक को एक विशेष प्रकार का तृतीय नेत्र मिलता है। साधक फिर इसी तृतीय नेत्र से परमात्मा की तरफ यात्रा जारी रखता है।

यह इस प्रकार से है जैसे कोयले की खदान में व्यक्ति के सिर पर टोप होता है और टोप के ऊपर एक बल्ब होता है। इसी बल्ब की रोशनी में फिर कोयले की खदान में यात्रा की जाती है। इसी प्रकार साधक का तृतीय नेत्र खुलता है। यह तृतीय नेत्र से ही साधक परमात्मा तक पहुँचता है एवं यह तृतीय नेत्र माया और प्रकृति में अन्तर बता देता है।

यहाँ पर साधक को परमात्मा के संदेश भी प्राप्त होने लगते हैं। परमात्मा के संदेश का आशय है कि साधक अब परमात्मा की सुनने लगता है। और परमात्मा की सुनना ही ध्यान का लगना है। यहीं पर Meditation प्रारंभ होता है। क्योंकि साधक को तिल के आकार की तृतीय नेत्र के साथ ही एक Sim भी मिलता है। यह Sim परमात्मा से Contact कलने के लिए होता है। इसलिए इस चक्र को "तिलस्म" भी कहते हैं।

इसी आज्ञा चक्र पर साधक को प्रज्ञा यानि Wisdom मिल जाती है। यानि साधक की बुद्धि जो बुड्ढी हो चुकी थी फिर से जवान हो जाती है। इसी प्रज्ञा के बल पर साधक प्रकृति और माया में अन्तर

को पहचान लेता है। यानि झूठ एवं सच को पहचानने की समझ आ जाती है।

आज्ञा चक्र के सिद्ध हो जाने पर साधक के टखनों में जान आ जाती है।

इस आज्ञा चक्र का लालच सभी को है। इसी आज्ञा चक्र के चक्कर में बहुत से लोग कुण्डलिनी शक्ति को जगाने के चक्कर में लग जाते हैं। इसी आज्ञा चक्र से बड़े-बड़े साधक परमात्मा से चूक जाते हैं और वापस मूलाधार पर पहुँच जाते हैं।

इस आज्ञा चक्र का भेदन लगातार ध्यान में बैठने पर होता है। लगातार ध्यान में बैठने से आज्ञा चक्र की कोई भी आज्ञा नहीं मानने से धीरे-धीरे यह शांत हो जाता है और व्यक्ति में शान्ति का उद्भव होता है। फिर व्यक्ति शान्ति, निश्चितंता एवं धैर्य से परमात्मा की तरफ बढ़ता है।

आज्ञा चक्र राग-द्वेष का पायदान। इसलिए यहाँ पर साधक को राग और द्वेष दोनों होते हैं। यहीं पर कमल जो Lock है और उस Lock हुए कमल को खोलकर सहस्रार तक जाना है।

सहस्त्रार चक्र का रहस्य

- सातवां सवाल -

हम्माम बाद गर्द की खबर।

आज्ञा चक्र से सहस्रार की यात्रा बड़ी कठिन है। इसलिए सावधानी से करनी है। यहाँ जगह कम है और वह भी Lock है। सहस्रार यानि वह कुण्ड जहाँ पर सब तरफ से पानी के झरने फूटे हैं। इस कुण्ड में ही Lock किया हुआ "कमल" है, जिसका Lock साधक को खोलना है। जिसका नाम "कमलाक" है। यह कमलाक ही तो साधक का तान्त्रिक रूप है। कमल के इस तान्त्रिक रूप के Lock को ही तो खोलना है।

कमल अक। सहस्रार चक्र से पहले आज्ञा चक्र साधक को "अ" और "क" के शब्दजाल रूपी ज्ञान में बंदी बना लेता है। यानि साधक अनाहत चक्र के कंठ और आज्ञा चक्र के शब्द ज्ञान में फंस जाता है। साधक बहुत अच्छा गाने लगता है और प्रवचन बहुत अच्छा करने लगता है।

सहस्रार चक्र पर "अ" यानि "स्वर" और "क" यानि व्यंजन का ज्ञान को छोड़ देना पड़ता है। यहाँ व्यक्ति का शब्द ज्ञान उसको त्याग करना पड़ता। यानि व्यक्ति को अपना सारा शब्द ज्ञान मिटाना पड़ता है। व्यक्ति को संसार से ऊपर उठना पड़ता है। संसार का जो ज्ञान

साधक ने तोते की तरह रट लिया है। वह तोते की तरह रटा हुआ ज्ञान छोड़ना है।

जब सहस्रार का ज्ञान प्रस्फुटित होता है। तब तोते की तरह रटा हुआ ज्ञान समाप्त होने लगता है। साधक को लगता है कि तोते की तरह रटा हुआ ज्ञान समाप्त होने पर साधक समाप्त हो जाएगा। किन्तु ऐसा नहीं है। क्योंकि जब परमात्मा का ज्ञान उपलब्ध हो जाता है, तब सारा भ्रम समाप्त हो जाता है। साधक को सहस ही सार मिल जाता है। यानि साधक प्रफुल्लित हो जाता है। यह सहस ही फिर सहज कहलाता है। साधक के चेहरे पर ही नहीं अपितु पूरे शरीर में एक भिन्न प्रकार की मुस्कुराहट होती है।

जब साधक आज्ञा चक्र से सहस्रार चक्र में प्रवेश करने लगता है। तब नाक के ऊपरी हिस्से में जहाँ नाक से श्वास आती है और फिर नीचे नाभि तक जाती है। नाक के उसी हिस्से में परमात्मा निवास करता है। यहीं पर साधक और परमात्मा का मिलन होता है। यहीं पर समाधि लगती है। यहीं पर आत्मा-परमात्मा का योग होता है। यहीं पर कमल खिल जाता है। यह हम्माम तो है किन्तु बिना पानी का। यानि बिना पानी का हम्माम और जिसमें कमल खिला है। कमल का बाग खिला है।

सहस्रार में साधक के टखने से नीचे पैर तक पूरा प्राणवान हो जाता है। पूरा का पूरा जड़ शरीर पुनः प्राणवान हो जाता है। साधक की कुण्डलिनी पूर्ण जाग्रत हो जाती है।

अहंकार सहस्रार का सातवाँ पायदान। इसी अहंकार से यहाँ बचना है। क्योंकि यह अहम का कार्य है। इसलिए अहंकार्य होने से "मैं" रूपी अहम यहाँ जन्म लेता है। इसी "मैं" रूपी "अहम" को "हम" में बदलना है। यही "हम" ही "हम्माम" है। इस "हम्माम" में सब नंगे हैं। इसलिए परमात्मा को उपलब्ध व्यक्ति "नागा साधु" हो जाता है। क्योंकि कामुकता समाप्त हो जाती है। और पूरा दिल बाग-बाग हो जाता है। और फिर "नागा साधु" "गर्द" यानि "भस्म" को पूरे शरीर पर लगा लेता है। फिर नागा साधु "हम्माम" में शाही स्नान करता है क्योंकि साधक अब "शाह" हो जाता है।

क्योंकि "काम" रूपी "कामुकता" को "कार्य" में परिवर्तित कर दिया गया है। जब "काम" एक "कार्य" हो जाता है। तब "कामुकता" का तिरोहन हो जाता है। और पत्थर की मूर्ति में भगवान की प्राण-प्रतिष्ठा हो जाती है। पत्थर भी भगवान हो जाता है।

इसलिए सभी लोग भगवान के पास आते हैं कि उनमें "कामना" यानि काम ना हो और "कार्य" हो। कामुकता रूपी बुरी नज़र जब उल्टी हो जाती है। तब कार्य रूपी परमात्मा को प्राप्त कर लेती है। और मनुष्य को जाग्रत रखती है। कुण्डलिनी शक्ति को उपलब्ध करवा देती है।

इसलिए मूर्ति के दर्शन किए जाते हैं। मूर्ति के Vibration से अपने भीतर पवित्रता को प्राप्त किया जाता है।

तो यह हातिमताई का पूरा किस्सा है। जो पत्थर से जीवन तक

जाता है। और सात चक्र या सात आसमान या Seven Spaces का भेदन करते हुए परमात्मा को पाता है।

"ऊर्जा आपके भीतर
है, आपको मेडिटेशन
करके इस ऊर्जा को
जाग्रत करना चाहिए"

— "ध्यायानाचार्य"
ब्रह्मचारी प्रहलादानंद